

बीए अर्थशास्त्र (सांख्यिकी)

Semester 01 (Paper 02)

सांख्यिकी: अर्थ, विशेषताएं एवं क्षेत्र
(Statistics: Meaning, Features and Scope)

सांख्यिकी

स्टैटिस्टिक्स (STATISTICS)

STATUS

(लैटिन भाषा)

STATISTA

(इटालियन भाषा)

STATISTIK

(जर्मन भाषा)

राज्य या राजनितिक कार्य

प्राचीन काल में, 'सांख्यिकी' राजनीति का एक हिस्सा था और राज्य के कर्मचारियों द्वारा राज्य से संबंधित आँकड़ों को एकत्र करने के लिए इसका उपयोग किया जाता था। जैसे जन्म दर, मृत्यु दर, राज्य की आय, उद्योग आदि।

सांख्यिकी का शाब्दिक अर्थ है संख्या से संबंधित शास्त्र। इस प्रकार विषय के रूप में सांख्यिकी ज्ञान की वह शाखा है जिसका संबंध संख्याओं या संख्यात्मक आंकड़ों से

THE ECONOMICS GURU

सांख्यिकी

जर्मन विज्ञानी - गोटफ्राइड आकेनवल (GOTTFRIED ACHENWALL)

सन 1749 में

सांख्यिकी के पिता

(FATHER OF STATISTICS)

वर्तमान युग में सांख्यिकी को विकसित करने में कार्ल पियर्सन का योगदान सबसे अधिक है।

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर। अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यादा से ज्यादा शेयर कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते हैं, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेंट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते हैं (Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली

The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।



अभी VISIT करें

www.theeconomicsguru.com

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

Follow me:



THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

Facebook- *Nakul Dhali*

Instagram- *@theeconomicsguru*

सांख्यिकी का अर्थ एवं परिभाषा

सांख्यिकी की परिभाषा दो रूपों में दी जा सकती है :

- सांख्यिकी बहुवचन के रूप में
- सांख्यिकी एकवचन के रूप में

"सांख्यिकी ज्ञान की वह शाखा है जिसमें किसी भी क्षेत्र से संबंधित तथ्यों या आंकड़ों को संख्यात्मक रूप से एकत्रित कर उन संख्याओं का वैज्ञानिक तरीके से विश्लेषण किया जा सकता है और उनसे तार्किक निष्कर्ष प्राप्त किया जा सकता है।"

सांख्यिकी बहुवचन के रूप में

बहुवचन में सांख्यिकी का अभिप्राय समकों या आंकड़ों (STATISTICAL DATA) के समूह से है।

ऐसी सूचना जो मात्रात्मक है किन्तु समूह में नहीं उसे सांख्यिकी नहीं कहा जा सकता है।

सांख्यिकी की परिभाषा

बाउले के अनुसार - "समंक किसी अनुसंधान के किसी विभाग में तथ्यों का संख्या के रूप में प्रस्तुतीकरण है, जिन्हें एक दूसरे से सम्बन्धित रूप में प्रस्तुत किया जाता है"।

आकेनवाल के अनुसार , "राज्य से सम्बन्धित दोनों प्रकार के ऐतिहासिक व विवरणात्मक महत्वपूर्ण तथ्यों का संग्रह समंक है।"

सांख्यिकी एकवचन के रूप में

एकवचन के रूप में सांख्यिकी का अर्थ सांख्यिकी विज्ञान या सांख्यिकी विधियों से होता है।

अर्थात्,

सांख्यिकी वह विधि है जो संख्यात्मक आंकड़ों के संकलन के वर्गीकरण, प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण तथा निर्वचन का अध्ययन करती है।"

सांख्यिकी की परिभाषा :-

फरग्यूसन के अनुसार,

"सांख्यिकी वैज्ञानिक विधि यन्त्र की शाखा है जिसका सम्बन्ध सर्वेक्षणों तथा परीक्षणों द्वारा प्राप्त होने वाली सामग्री के संकलन वर्गीकरण और व्याख्या से है।"

रोस्को के अनुसार

“सांख्यिकी एक आधुनिक शैक्षणिक संकाय है, जो व्यवहारपरक विज्ञानों में पायी जाने वाली मात्रात्मक सूचनाओं के संकलन, व्यवस्थापन, सरलीकरण और विश्लेषण की वैज्ञानिक प्रक्रिया प्रदान करती है।”

क्राक्सटन एवं काउडेन

“सांख्यिकी वह विज्ञान है जिसे संख्यात्मक समंकों के संग्रहण, प्रस्तुति, विश्लेषण और निर्वचन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।”

सांख्यिकी की अवस्थाएं / चरण

- आंकड़ों का एकत्रीकरण (Collection of Data)
- आंकड़ों का वर्गीकरण (Classification of Data)
- आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण (Presentation of Data)
- आंकड़ों का विश्लेषण (Analysis of Data)
- आंकड़ों का निर्वचन (Interpretation of Data)

सांख्यिकी की विशेषताएं (Features of Statistics)

1. समंक तथ्यों के समूह होते हैं

श्री होरेस स्क्रिस्ट के विचारों से समंक किसी व्यक्ति या वस्तु विशेष के लिए नहीं होते हैं अपितु वे किसी समूह के तथ्यों को प्रदर्शित करते हैं। अर्थात् यह एक व्यक्ति के लिए कोई संख्या दी जाये तब वह समंक नहीं होगा, लेकिन एक समूह के लिए दी जाये तब समंक कहलाने लगेंगी।

2. सांख्यिकी साधन प्रस्तुत करती है, निष्कर्ष नहीं

सांख्यिकी केवल साधन प्रस्तुत करती है, निष्कर्ष नहीं। यदि अनुसन्धानकर्ता की भावना पक्षपातपूर्ण हो, तो सांख्यिकी निष्कर्ष अशुद्ध हो जाते हैं, क्योंकि ऐसी दशा में अनुसन्धानकर्ता सदैव ऐसा प्रयास करता है कि परिणाम उसकी पूर्व धारणा के अनुसार हो।

3. समंको की गणना अथवा अनुमान द्वारा संकलित किया जाता है

होरेस स्क्रिस्ट का विचार है कि समंको का संकलन या तो साधारण गणना के आधार पर

किया जाता है या फिर पूर्व घटनाओं एवं अनुभवों के आधार पर अनुमान लगाकर किया जाता है। यदि समंक संकलन का क्षेत्र सीमित है, तब गणना विधि के द्वारा और यदि क्षेत्र विस्तृत है, तब अनुमानित आधार पर इनका संकलन किया जाता है।

4. गणितीय शुद्धता का अभाव

सांख्यिकी के नियम केवल औसतन ही सही होते हैं, उनमें गणितीय शुद्धता का अभाव पाया जाता है।

5. संकलन सुव्यवस्थित तरीके से हुआ हो

समंको का संकलन स्ट्रिक्ट के अनुसार सुव्यवस्थित ढंग से होना चाहिए। यदि उनका संकलन योजनानुसार नहीं किया गया है तब वे समंक नहीं कहलायेंगे।

6. सजातीय आवश्यक

सांख्यिकी समंको की तुलना हेतु उनका सजातीय होना आवश्यक है। कपड़ों और जूतों की तुलना संभव नहीं है।

7. समंक अंको अथवा संख्या में व्यक्त किये जाते हैं जाते हैं

समंक हमेशा अंकों में अथवा संख्या में प्रस्तुत किये जाते हैं। यदि कोई तथ्य संख्या में प्रस्तुत नहीं किया गया है, तब वह समंक नहीं होगा।

सांख्यिकी की प्रकृति (Nature of statistics)

सांख्यिकी के स्वभाव के अंतर्गत इस बात का अध्ययन किया जाता है कि सांख्यिकी का स्वभाव कैसा है? इसकी प्रकृति कैसी है? जैसे कि सांख्यिकी का स्वभाव विज्ञान की तरह है या कला की तरह या फिर विज्ञान और कला दोनों की तरह।

(अ) सांख्यिकी एक विज्ञान है (statistics as a science)-

विज्ञान उस शास्त्र को कहा जाता है जिसमें किसी भी विषय का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है। सांख्यिकी को भी विज्ञान की श्रेणी में गिने जाने के निम्न आधार हैं-

1. सांख्यिकी का भी विज्ञान की ही तरह क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है। यह बड़ी ही तीव्र गति से, विज्ञान की ही भांति विकास कर रहा है।

2. सांख्यिकी की विभिन्न रीतियों का सभी क्षेत्रों में व्यापक प्रयोग हो रहा है। जैसे संभावना का सिद्धांत, सांख्यिकी नियमितता नियम, महान्क जड़ता नियम आदि विज्ञान की तरह ही सार्वभौमिक नियम हैं।
3. जिस तरह विज्ञान में विस्मंलेशन द्वारा कारण व परिणाम प्राप्त किये जाते हैं। ठीक उसी तरह सांख्यिकी में भी समकों का संकलन, विश्लेषण, कारण व परिणाम का संबंध बताते हुए निर्वचन किया जाता है।
4. सांख्यिकी में भूतकाल तथा वर्तमान के तथ्यों के आधार पर भविष्य की घटनाओं का पूर्वानुमान अनेक विषयों द्वारा लगाया जाता है। जिनमें काल श्रेणियों के विश्लेषण, बह्यगणन, प्रतिपगमन आदि प्रमुख हैं।

(ब) सांख्यिकी एक कला है (statistics is an art)-

इस माना जाता है कि 'यदि विज्ञान ज्ञान है, तो कला क्रिया है।' यानि कि कला से अभिप्राय ज्ञान की उस शाखा से है, जो विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु सर्वोत्तम रीतियों को बदलती है। तथा तथ्यों को प्राप्त करने का उपाय भी सुझाती है। इसलिए सांख्यिकी को हम निम्न आधार पर कला कह सकते हैं-

1. सांख्यिकी विभिन्न समस्याओं का समाधान हेतु समकों के प्रयोग व उनके प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं निष्कर्ष निकालने के लिए उपाय एवं साधन प्रस्तुत करती है।
2. सांख्यिकी में विशेष रूप से इस बात का अध्ययन भी किया जाता है कि भिन्न-भिन्न समस्याओं के लिए भिन्न-भिन्न सांख्यिकीय रीतियों एवं नियमों का प्रयोग कैसे किया जाए? अंकगणित माध्य का प्रयोग कहाँ उत्तम है? माध्यिका का प्रयोग किस दिशा में उत्तम होगा? निर्देशांक कैसे बनाएं? किस माध्य का प्रयोग किया जाए? यह सब हमें सांख्यिकी ही बताती है।
3. सांख्यिकी विधियों के व्यवहार के लिए व्यक्तियों में विशेष निपुणता, अनुभव तथा आत्म-संयम होना आवश्यक है। जो कि किसी विषय को कला कहने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

(स) सांख्यिकी विज्ञान और कला दोनों है (statistics is both a science and an art)-

अंततः हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि सांख्यिकी विज्ञान व कला दोनों ही है। यह इन दोनों जैसा व्यवहार प्रदर्शित करती है। इसकी विधियाँ मौलिक रूप से व्यवस्थित हैं और इनका सर्वत्र प्रयोग भी किया जाता है। तो दूसरी तरफ़ इसकी पद्धतियों का सफल प्रयोग, पर्याप्त सीमा तक इसकी योग्यता, विशेष अनुभव व उनके क्षेत्र के ज्ञान पर आश्रित होता है। जैसे अर्थशास्त्र। अर्थात सांख्यिकी विज्ञान और कला दोनों का ही सम्मिलित रूप प्रदर्शित करती है।

सांख्यिकी की सीमाएं (Limitations of statistics)

- 1. सांख्यिकी केवल संख्यात्मक तथ्यों का अध्ययन करती है, गुणात्मक तथ्यों का नहीं-** सांख्यिकी के अंतर्गत केवल ऐसे तथ्यों का अध्ययन किया जाता है जो कि संख्यात्मक रूप में हो। इसके अंतर्गत गुणात्मक तथ्यों जैसे- ईमानदारी, मित्रता, स्वास्थ्य, न्याय आदि का अध्ययन नहीं किया जाता। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो हम यह कह सकते हैं कि इसमें केवल मानवीय क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है, गैर-मानवीय क्रियाओं का नहीं।
- 2. केवल समूहों का अध्ययन करती है, व्यक्तिगत इकाइयों का नहीं-** इसके अंतर्गत किसी विशेष इकाई को लेकर उसके व्यक्तिगत गुणों का विवेचन नहीं किया जाता है। बल्कि समूहों का अध्ययन किया जाता है।
- 3. सांख्यिकीय समंकों का सजातीय होना आवश्यक है-** सही निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए यह अत्यंत आवश्यक होता है कि सांख्यिकीय समंकों सजातीय हों। उन्हें एक ही तरीके से एकत्रित किया गया हो। उनकी प्रकृति एकसमान हो। यदि ऐसा नहीं हुआ तो निकाले गए निष्कर्ष भ्रमात्मक हो सकते हैं।
- 4. सांख्यिकीय नियम दीर्घकाल में तथा औसतन रूप में ही सत्य होते हैं-** सांख्यिकी नियम दीर्घकाल और औसत रूप में ही सत्य होते हैं। ये प्राकृतिक विज्ञानों की ही तरह सार्वभौमिक, दृढ़ और सर्वमान्य भी नहीं होते। ज़्यादातर ये औसत रूप में दीर्घकाल में ही सत्य पाए जाते हैं।
- 5. जानकारी के अभाव में सांख्यिकी का दुरुपयोग संभव है-** सांख्यिकी का प्रयोग वही व्यक्ति कर सकता है जिसे सांख्यिकी का पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो। इसकी रीतियों से वह पूरी तरह परिचित हो। बिना पूर्ण ज्ञान के निकाले गए निष्कर्ष भ्रमात्मक व अशुद्ध हो सकते हैं। यह कहा जा सकता है कि "सांख्यिकी अयोग्य हाथों के लिए नहीं है।"

6. सांख्यिकीय निष्कर्ष संदर्भ के अभाव में असत्य व भ्रामक हो सकते हैं- सांख्यिकी निष्कर्षों को अच्छी तरह समझना हो तो उन परिस्थितियों को भी भली भाँति समझना होगा जिन परिस्थितियों में निष्कर्ष निकाले गए हों। अन्यथा ऐसे निष्कर्ष गलत व भ्रामक साबित हो सकते हैं।

7. विशेषज्ञ ही सांख्यिकीय रीतियों का सही इस्तेमाल कर सकते हैं- चूँकि सांख्यिकीय तकनीक व रीतियाँ आसान नहीं होतीं। ये तकनीक जटिल होती हैं। इसलिए इसे सामान्य व्यक्ति प्रयोग में नहीं ला सकता। सही जानकार ही सांख्यिकी का उपयोग बेहतर कर सकता है। स्पष्ट है इन रीतियों का इस्तेमाल विशेषज्ञों द्वारा ही उचित होता है।

सांख्यिकी के क्षेत्र

सांख्यिकी का क्षेत्र जो प्राचीन काल में केवल राज्य तक सीमित था, वर्तमान समय में अत्यधिक व्यापक हो गया है। आज सांख्यिकी का क्षेत्र उन तमाम क्षेत्रों तक फैला हुआ है जहाँ संख्यात्मक समंकों तथा तथ्यों का व्यवहार किया जाता है। जैसे- अर्थशास्त्र, वाणिज्य, गणित, जीवविज्ञान प्रशासन, राजनीतिशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, मनोविज्ञान, व्यवसाय आदि।

डब्ल्यू जे रिचमैन के अनुसार, “सांख्यिकी विशेष रूप से गतिशील है। वह निरंतर आगे बढ़ रही है। अधिक कुशल तकनीकी अधिग्रहण सुविधाएं और परिणामस्वरूप सर्वेक्षण की घटती लागत इस क्षेत्र को और अधिक व्यापक बनाने में सहायता देती है”।

अध्ययन की सुविधा के लिए सांख्यिकी के क्षेत्र को दो प्रमुख विभागों में बांटा जाता है-

1. सांख्यिकीय रीतियाँ
2. व्यावहारिक सांख्यिकी

EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

सांख्यिकीय रीतियाँ (Statistical Methods)

वे रीतियाँ जिनका उपयोग सांख्यिकीय में किया जाता है सांख्यिकीय रीतियाँ कहलाती हैं।

यूल और केंडल के अनुसार, “सांख्यिकीय रीतियों से हमारा तात्पर्य उन रीतियों से हैं जिनका प्रयोग अनेक कारणों से प्रभावित समंकों की व्याख्या करने के लिए किया जाता है”।

सांख्यिकीय रीतियाँ वे युक्तियाँ हैं जिनके द्वारा जटिल संख्या के समकों का इस प्रकार विश्लेषण किया जाता है जिससे वे समझने योग्य हो सकें और उनसे ठीक परिणाम निकाला जा सके।

महत्वपूर्ण सांख्यिकीय रीतियां निम्नलिखित हैं:

- I. समकों का संकलन (Collection of Data)
- II. समकों का वर्गीकरण (Organisation of Data)
- III. समकों का प्रस्तुतीकरण (Presentation of Data)
- IV. समकों का विश्लेषण (Analysis of Data)
- V. समकों का निर्वचन (Interpretation of Data)
- VI. पूर्वानुमान (Forecasting)

व्यावहारिक सांख्यिकी (Applied Statistics)

सांख्यिकीय रीतियों से हमें सिद्धांतों का ज्ञान होता है परंतु उन रीतियों को व्यवहार में किस प्रकार प्रयोग किया जाए उसका अध्ययन व्यावहारिक सांख्यिकी में किया जाता है।

किस समस्या से संबंधित अंकों का किस प्रकार संग्रहण, विश्लेषण, प्रदर्शन व निर्वचन किया जाए, यह व्यावहारिक सांख्यिकी का क्षेत्र है। किसी समस्या के समाधान में हम इसके सिद्धान्तों को मूर्तरूप देते हैं। जनसंख्या, उत्पादन, व्यवसाय या जन्म मरण से संबंधित समकों को कैसे क्रियात्मक रूप दिया जाए यह इस विभाग का कार्य है।

सांख्यिकी के कार्य (Functions of Statistics)

- जटिल तथ्यों को सरल बनाना
- तथ्यों को संख्यात्मक रूप से प्रकट करना
- तथ्यों को निश्चितता प्रदान करना
- तथ्यों की तुलना करना
- तथ्यों के बीच संबंध का अध्ययन करना
- व्यक्तिगत ज्ञान एवं अनुभव में वृद्धि करना
- नियमों व सिद्धांतों की सत्यता की जांच करना
- नीति निर्धारण में सहायता प्रदान करना
- प्रभावों को मापना
- आयोजन तथा भविष्यवाणी करना
- विस्तार का अनुभव करने की योग्यता प्रदान करना

सांख्यिकी का महत्व (Importance of Statistics)

अर्थशास्त्र में सांख्यिकी का महत्व

अर्थशास्त्र में किसी भी नियम को बनाने के लिए पूर्व अनुभव तथा कुछ तथ्यों का चुनाव महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

तथ्यों के आधार पर किसी निष्कर्ष की परिकल्पना की जाती है तथा उनका परीक्षण किया जाता है जिस आधार पर अर्थशास्त्र के सिद्धांतों का प्रतिपादन होता है।

अंतरराष्ट्रीय निवेश और बजट, अदा प्रदा विश्लेषण जैसी अनेक आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन सांख्यिकी के अंतर्गत ही किया जाता है।

आर्थिक नियोजन में सांख्यिकी का महत्व

भारतीय आर्थिक नियोजन में भी उद्देश्यों की पूर्ति और नीति एवं प्रशासन संबंधी निर्णय लेने के लिए निरंतर अधिकाधिक मात्रा में सांख्यिकी की आवश्यकता होती है।

नीति आयोग (पूर्व में योजना आयोग) ने इस संबंध में लिखा है कि नियोजन के लिए देश का आर्थिक विकास समर्थकों के आधिकारिक प्रयोग पर निर्भर करता है।

अशुद्ध समर्थकों के आधार पर किया जाने वाला नियोजन अर्थव्यवस्था के न होने से भी बुरा है।

आर्थिक विश्लेषण में सांख्यिकी का महत्व

आर्थिक विश्लेषण में सांख्यिकी का महत्व निम्न तथ्यों से स्पष्ट होता है:

- उपभोग के क्षेत्र में
- उत्पादन के क्षेत्र में
- विनिमय के क्षेत्र में
- वितरण के क्षेत्र में
- राजस्व के क्षेत्र में

व्यवसाय में सांख्यिकी का महत्व

आधुनिक युग में व्यवसाय के क्षेत्र में सांख्यिकी का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है।

आजकल व्यवसाय के लिए किसी भी व्यवसाय में अनुमान व संभावनाओं का महत्वपूर्ण स्थान है, *उसे यह जान लेना आवश्यक होता है कि अमुक वस्तु की मांग कहाँ और कैसी होगी मूल्य घटने या बढ़ने की संभावना क्या है सरकार की नीति एवं उपभोक्ताओं की रुचि किस प्रकार से होगी?*

डॉ. वडिंगटन के अनुसार, “एक सफल व्यवसाय वही है जिसका अनुमान वास्तविकता से अधिक निकट होता है”।

व्यवसाय की सफलता और अधिकतम लाभ कमाने के लिए सांख्यिकीय समर्थकों का एकत्रीकरण आवश्यक हो जाता है। जिसमें अध्ययन करने के पश्चात व्यवसायी अपने भविष्य से संबंधित नियोजन करने में सहायता प्राप्त करता है।

THE ECONOMICS GURU

EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर। अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यादा से ज्यादा शेयर कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते हैं, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेंट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते हैं (Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली

The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।



अभी VISIT करें

www.theeconomicsguru.com

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

Follow me:



THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

Facebook- *Nakul Dhali*

Instagram- *@theeconomicsguru*